

खंड - 'क'

1. गांधांश ।

(क) गांधीजी बुराई करने वालों को प्यार करना चाहते थे तथा धैर्य और नम्रता के साथ समझाकर उन्हें सही रास्ते पर लाना चाहते थे ।

(ख) अगर दुनिया बुराई को बढ़ावा देना बंद कर दे तो बुराई के लिए आवश्यक पोषण के अभाव में अपने-आप मर जाएंगे और बुराई समाप्त हो जाएगी ।

(ग) गांधीजी कहते हैं कि प्रेम की शक्ति बुराई को समाप्त करने में पड़कर हम बुराई सहन करते हैं । वह उस प्रेम की बात नहीं कर रहे जिसे पिता गलत रास्ते पर चल रहे अपने पुत्र की पीठ धपधपाता है । वह उस प्रेम की बात कर रहे हैं जो विवेकयुक्त है, बुद्धियुक्त है और शक्ति गलती की ओर से

भी आँख बंद नहीं करता। यह सुधारने वाला प्रेम है।

(घ) असहयोग का मतलब बुराई करने वालों से नहीं, बल्कि बुराई से असहयोग करना है।

(ङ) उपर्युक्त राधांश का शीर्षक होना चाहिए 'गांधीजी के विचार'।

2. पद्यांश।

(क) कुछ बच्चों का माता-पिता की उदासी में उजाला भर देने का भाव निम्नलिखित पंक्ति में आया है:-

तुम्हारी निश्चल आँखें
तारों-सी चमकती हैं मेरे अकेलेपन की रात के आकाश में।

(ख) बच्चों को माता-पिता का साँख नुकीले पत्थरों
जैसा लगता है।

(ग) माता-पिता के लिए अपना बच्चा सर्वश्रेष्ठ इसलिए
होता है क्योंकि उन्हें वह दुनियाभर में पिताओं की लंबी कतार
है और उन्हें अपना संतान करोड़ों करोड़ों नंबर के बाद मिलती है
और बच्चों की दुनियाँ में अपने बच्चे का स्थान सर्वश्रेष्ठ होता है।

(घ) कवि को ऐसा प्रतीत होता था कि उसके सानिध्य
तथा उसकी दृत्रदाया में ही उसके बच्चे का
जीवन और उसकी रंग-बिरंगी दुनिया सुरक्षित है
इस बात को कवि ने अपना सूखता बताया है।

(ङ) इस पंक्ति का यह अर्थ है कि पिता अपने बच्चे
के झले के लिए कर्मा - कर्मा उसको नसोहितें
न देते हैं या डाँट भी देते हैं परंतु बच्चों को
पिता को इस डाँट में उनका प्रेम नहीं दिखाई
देता है।

खंड - 'ख'

(क) आश्रित उपवाक्य → अब बुढ़ापा आ गया।

3 (ख) भेद → संज्ञा ~~उपवाक्य~~ आश्रित उपवाक्य ①

(ख) जब मैंने मॉरीशस की स्वच्छता देखी तब मेरा मन प्रसन्न हो गया। ①

(ग) गुरुदेव आराम कुर्सी पर लेटकर प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद ले रहे थे। ①

4. वाच्य परिवर्तन।

5 (क) मई महीने में शीला अग्रवाल की

(क) मई महीने में कॉलेज वालों के द्वारा शीला अग्रवाल की नोटिस चमा दिया गया था। ①

(ख) देशभक्तों की शहादत आज भी याद की जाती है ।

(ग) खबर ^{सुनने के कारण} सुनकर उससे चला भी नहीं जा रहा था ।

(घ) पहले-पहल आग का आविष्कार करने वाला आदमी कितना बड़ा आविष्कर्ता होगा ।

5. पद-परिचय ।

(क) गाँव की - जातिवाचक संज्ञा, संबंध कारक, स्तकवचन,
पुल्लिंग

मिट्टी - जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, स्तकवचन

मैं - उत्तमपुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, स्तकवचन,
कर्ता कारक

तरस राधा - अकर्मक क्रिया, भूत काल

(क) शृंगार रस ✓ ①

(ख) शोक ✓ ①

(ग) 'हास्य रस - 'सरकंडे से हाँथ - पाँव मटके जैसे पैट
पिचके - पिचके गाल दौऊ, मुँह तो देखो
इंढिया गोट'। ✓ ①

(घ) वीर रस ✓ ①

खंड - 'ग'

7.

(क) जब हालदार साहब चौंरहे पर रोक रुकते तो वहाँ ✓

लगा नेताजी सुभाषचंद्र बोस जी की मूर्ति को देखा करते थे। मूर्ति तो संगमरमर की थी परंतु उस पर चश्मा असली लगा था। उन्हें लगा कि शायद मूर्तिकार चश्मा बनाना मूल गया और वहाँ के नागरिकों ने असली चश्मा मूर्ति पर लगा दिया। हलदार साहब को यही प्रयास सराहनीय लगा।

(ख) इस पंक्ति में यह बताया गया है कि आजकल लोगों के मन में देशभक्तों के लिए सम्मान की भावना नहीं रही। आजकल लोग देशभक्ति को मूलते जा रहे हैं, वे देशभक्ति को पागलपन कहते हैं और देशभक्तों को पागल। उनके लिए देशभक्ति महत्वपूर्ण नहीं है केवल अपना स्वार्थ महत्वपूर्ण है।

(ग) दूसरी बार देखने पर लेखक की मूर्ति की आँखों पर नया चश्मा लगा हुआ मिला।

8.

(क) 'बालगोबिन भगत' पाठ में बालगोबिन भगत ने अपनी पुत्रवधु से अपने बेटे को सुवाम्नि दिलाई जबकि स्त्रियों को अंतिम संस्कार करने की आज्ञा नहीं दी जाती है। और भगत ने उसके पश्चात अपनी पुत्रवधु का पुनर्विवाह करने का निश्चय किया जबकि समाज में विधवा स्त्री के पुनर्विवाह का प्रचलन नहीं है।

(ख) स्त्री शिक्षा विरोधियों ने जब प्राचीन काल में स्त्रियों के लिए कोई शिक्षा प्रणाली न बताकर स्त्रियों को शिक्षित करने के लिए रोका तब महावीर जी ने कहा कि यदि अतीत में स्त्रियों की कोई शिक्षा प्रणाली नहीं तो क्या हुआ आज के युग में स्त्रियों को शिक्षा की आवश्यकता है और शिक्षा प्रणाली में संशोधन के आश्चर्य के बाद स्त्री और पुरुष दोनों ही शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे।

(ग) इस कथन का यह आशय है कि काशी के बाबा विश्वनाथ

और बिस्मिल्लाख़ाँ एक दूसरे के बिना अधूरे हैं क्योंकि बिस्मिल्लाख़ाँ के दिन की शुरुआत बाबा विश्वनाथ मंदिर की ड्यौड़ी पर शहनाई बजाने से होती थी यदि वे काशी से बाहर होते थे तो वे अपनी शहनाई का प्याला विश्वनाथ मंदिर की ओर करके बजाते थे और सफलता और ऊँचाई प्राप्त करने के बाद भी वे काशी और विश्वनाथ मंदिर को छोड़कर नहीं गए।

(घ) वर्तमान समाज को 'समृद्ध' कहा जा सकता है क्योंकि हमारे समाज में जो भी उन्नति हो रही है वह सब हमारे पूर्वजों द्वारा किए गए आविष्कार, अनुसंधान के कारण ही है। प्राचीन काल में आग की खोज हुई, सुई-धागे का आविष्कार हुआ, गुरुत्वाकर्षण के नियमों से हमें अवगत कराया गया इत्यादि इन्हें इन सब आविष्कार और खोज के कारण ही हम नई-नई चीजें बना पाए और लगातार उन्नति की और अग्रसर हैं अतः हम अपने पूर्वजों से समृद्ध हैं।

पर उनसे ज्यादा संस्कृत नहीं। २

9.

(क) 'हारिल की लकड़ी' ऋग्वेद श्री कृष्ण की कहा गया है जिस प्रकार हारिल पक्षी सदैव अपने पंखों में लकड़ी दबाए रहता है उसी प्रकार गौपियों ने श्री कृष्ण को अपने मन में बसा रखा है।

(ख) 'तिनहि ले सौपी' में उनका और संकेत किया गया है जिनके मन चकरी के समान चंचल है व अस्थिर है। २

(ग) गौपियों को योग कड़वा ककड़ी के समान लगा रखा है जिसके बारे में उन्होंने न तो पहले कभी सुना और न ही देखा।

10.

(क) कवि जयशंकर प्रसाद ऐसा मानते हैं कि उन्होंने अपने जीवन में कुछ महान कार्य नहीं किया है जिसके बारे में पढ़कर लोग उससे प्रेरणा लेंगे, वह अपने जीवन में कुछ दृष्टक दृलकपटतापूर्ण व्यवहार के बारे में बताना नहीं चाहते हैं और उन्हें ऐसा लगता है कि उनके उनके खाली जीवन में पढ़कर लोग शायद उनका हँसी उड़ाएँ अतः वे अत्मकथा नहीं लिखना चाहते हैं।

(ख) गर्मी और ऊष्मा से परेशान लोग बादलों का इंतजार कर रहे हैं। बादलों की गर्जना से लोगों के मनु में बारिश के लिए उत्साह भर जाएगा और गर्जना के पश्चात् बादल में न सृष्टि के नवनिर्माण की शक्ति होती है और गर्जना के पश्चात् वे बारिश करके सबको शीतलता प्रदान करते हैं।

(ग) 'कन्यादान' कविता में स्त्री की दहेज के लालच में आग से जला देने के बात की गई है और पुरुष प्रधान समाज द्वारा स्त्री को वस्त्र-आभूषणों के बंधन में बाँध कर उसकी सरलता और कोमलता का फायदा उठाकर उस पर अत्याचार किया जाता है।

(घ) संगीतकार जानबूझ कर अपनी आवाज को मुख्य गायक की आवाज से धीमा रखता है क्योंकि वह चाहता है कि श्रोतागणों के बीच मुख्य गायक के संगीत उसके गायन का सिकका जमा रहे उसकी इस उसका स्वयं पृष्ठभूमि में रहना और मुख्य गायक की मुख्य कलाकार होने रहने देना उसकी मनुष्यता का परिचायक है विफलता का नहीं।

P.T.O

(खं) 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ में विज्ञान के दुरुपयोग का वर्णन किया गया है। इस पाठ में यह बताया गया है कि किस प्रकार अणु बम परमाणु हथियार का आविष्कार मानव जाति के समूल नाश का कारण बन सकता है। अस्पताल में लेखक द्वारा देखे गए कई परमाणु हथियारों के प्रकोप का कष्ट झेलते मरीजों का दृश्य हमारी आत्मा को झकझोर देता है और जले हुए पत्थर पर मनुष्य के शरीर की उजली छाया हमारे स्तन व हमारी कनि मानवता पर करारा प्रहार करती है। मनुष्य परिषकार गमूल कर स्वार्थ को अपनाता है यदि यह सब विज्ञान के और मानवीय बुद्धि का परिणाम है तो ऐसी बुद्धिमता का क्या लाभ जो मनुष्य से मनुष्य को मारना सिखाए। इस विषय पर हमें गहन विचार करने की आवश्यकता है हमें सभी व्यक्तियों की सुशिक्षा देनी चाहिए और लोगों को प्रेम,

सदभावना व मानवता का पाठ पढ़ाना चाहिए।
 उनमें हमें बच्चों में बचपन से ही उच्च अर्थात्
 बातें बतानी चाहिए तभी हम इस संसार में
 फँस रही अशान्ति अहिंसा को दूर कर पाएँगी
 और सदभावना का पाठ पूरे संसार को पढ़ा
 पाएँगी।

खंड - 'घ'

10 12. निबंध लेखन - (क) महानगरीय जीवन

विकास की अंधी दौड़ - आज प्रत्येक व्यक्ति महानगर
 में बसना चाहता है और इसका मुख्यतः
 कारण है विकास की कामना। लोगों की
 ऐसा प्रतीत होता है कि महानगरों में उन्हें
 उन्हें सभी सुविधाएँ प्राप्त होंगी उनका जीवन
 सुधर जाएगा और इसी धारणा के चलते आज

के वर्तमान युग में महानगरों में रहने तथा महानगरों को बसाने की होड़ गई है और इसी विकास की अंधी दौड़ के कुछ दुष्परिणाम भी हैं जैसे पर्यावरण की हानि। यदि विकास के चलते हम अपने ही पर्यावरण अपना ही धरती को नुकसान पहुँचाएंगे तो ऐसे विकास का क्या लाभ। माना कि विकास हमारे देश की उन्नति के लिए अति आवश्यक है परंतु इस विकास के लिए अपने देश के पर्यावरण को क्षति पहुँचाना कितना तर्कसंगत है।

- संबंधों का हास - महानगरीय जीवन आगा - दौड़ी का जीवन है और इस आगा - दौड़ी के चलते हमें सिर्फ पैसा कमाने से मतलब और सभी प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य बनकर रह जाता है।

इस व्यस्त जीवनशैली के चलते हम अपने पारिवारिक संबंधों पर ध्यान नहीं दे पाते और वह हमारे पारिवारिक संबंधों में राम-जोशी न होने के कारण रिश्ते फीके से पड़ने लगते हैं। महानगर में रह रहे व्यक्ति अपने आस-पड़ोस से भी ज्यादा घुलता मिलता नहीं है। रिश्तों को कायम रखने के लिए मेल-मिलाप, बात-चीत अति आवश्यक है परंतु काम के बोझ के चलते लोगों को एक दूसरे के साथ उठने-बैठने घुलने-मिलने का समय ही नहीं मिल पाता है।

• दिखावा - ग्रामीण जीवनशैली के बजाय शहरी जीवनशैली में कि दिखावा प्रवृत्ति अधिक है। महानगर में रह रहे व्यक्तियों को हमेशा एक दूसरे से अलग निकलने का हीड़ लगता

शर्ती है यदि एक व्यक्ति आर्थिक रूप से
 उतना सक्षम नहीं है कि वह चार पहिया
 वाहन खरीद सके फिर भी वह दूसरों
 को देखादेखा में वह अपनी आर्थिक स्थिति
 नहीं देखता परंतु अपने शौकों को पूरा
 करने की इच्छा करने लगता है जो
 उसके लिए हानिकारक होता है। ग्रामीण
 जीवन में एक सरलता होती है सबका
 सिद्धांत - 'सादा जीवन उच्च विचार होता है'
 परंतु शहरों में के जीवन में एक
 बनावटीपन होता है और मनुष्य अपने
 सुखों को प्राप्त करने के लिए सर्वस्व
 न्योच्छावर कर देता है और दूसरों की
 बराबरी करने के चलते वह अपने जीवन
 को ठीक से जीना गूल जाता है और
 जीवन के मुख्य लक्ष्य - 'जो कि उसे खुशकर
 होकर जीना है' उसे कभी प्राप्त नहीं कर
 पाता है।

134

औपचारिक पत्र

सेवा में,

पुलिस अधीक्षक आयुक्त

महोदय पुलिस चौकी

क ख गा नगर

विषय - आपकी सहायता से पार्क की स्वच्छ कखाने हेतु धन्यवाद पत्र।

मान्यवर,

मैं आपके क्षेत्र का नागरिक हूँ और मैंने अपने क्षेत्र के खेन के मैदान की समस्या के बारे में आपकी पुलिस चौकी में आकर बताया था कि लोगों ने कूड़ा और सारी गंदगी पार्क में फेंककर इसे उसकी सुंदरता को नष्ट कर दिया और अब बच्चों के खेलने के लिए भी कोई स्थान नहीं बचा। आपके द्वारा भेजी गई पुलिस फौर्स ने पार्क की सफाई का

कार्य शुरु करवाया और लोगों को कड़े आदेश दिए कि वे पार्क में गंदगी न फैलाएँ।

आपने और सभी पुलिस बल ने हमारी बहुत सहायता की और पार्क को बच्चों के खेलने का स्थान दोबारा से बनाने के लिए आप सबको बहुत धन्यवाद।

भवदीय
एक जागरूक नागरिक
अ. व. स
दिनांक - 06/03/2018

14.

विज्ञापन

P.T.O

P.T.O

विज्ञापन



हमारा पर्यावरण हमारी जिम्मेदारी है यदि हमें पेड़ों को काटेंगे, कूचरा इधर-उधर फैकेंगे कूड़ेदान में नहीं डालेंगे तो हमारे देश की स्वच्छता बरकरार नहीं रहेगी। हम सब से तो आइए प्रण लें कि आज से हम कभी भी अपने पर्यावरण को नुकसान नहीं

P.T.O

पहुँचाएँगे और, खाली पड़ी जमीन पर यौधे
 लगाएँगे कचरा हमेशा कूड़ेदान में ही
 फेंकेँगे और देश का अपने घर, आस-पसों
 पड़ोस के आसपास की जगह साफ रखेंगे और
 देश को स्वच्छ बनाने में अपना
 योगदान देंगे।

2004

~~Signature~~
 10/11/20